Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में स्त्री विमर्श (चाक उपन्यास के विशेष संदर्भ में)

प्रा.डॉ.मुकुंद गायकवाड
शोध मार्गदर्शक
प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
शिक्षण महर्षी ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय,
कलंब जि.उस्मानाबाद

परवीन याकूब शेख अन्सारी
शोध छात्रा
डॉ.बा.आं.म.वि.औरंगाबाद

भूमिका :

सम्बन्ध में विश्व स्त्री विमर्श की चर्चा आज जोरो पर हैं । वास्तव में इस चर्चा की शुरूवात प्रख्या फ्रेंच विचारक सीमोन द बोआ के 'सेकंड सेक्स' किताब से हुई । इस किताब ने स्त्री विमर्श की चर्चा की शुरूवात ही नहीं की बल्कि सम्बन्ध विश्व में तहलका मचा दिया । नारी को बचपन से लेकर मृत्यु तक पुरूष प्रधान संस्कृति ने किस तरह प्रताडित किया है इसका कच्चा चिठ्ठा ही यह किताब है । भारतवर्ष में स्त्री को विशेष सम्मान दिया गया है । उसे धरती माँ की उपमा भी दी है । माँ देवी के रूप में उसे पूजा भी जाता है, लेकिन इसी नारी को वास्तव रूप में बहुत प्रताडित किया जाता है । कुछ परिवार में उसे जन्मत:ही अशुभ माना जाता है । इसी कारण बचपन से ही लडका-लडकी में भेद किया जाता है । खानपान से लेकर रहन-सहन तक पुरूष के बदले में उसे दोयम स्थान दिया जाता है । इसी स्त्री-पुरूष भेद को लेकर, स्त्री सम्मान के लडाई के लिए महिला कथाकार साहित्य के माध्यम से संघर्ष करती नजर आती है । इन कथाकारों में एक मैत्रेयी पुष्पा है जो आपने आप एक अलक महत्व रखती है ।

आधुनिक कथाकारों में मैत्रेयी पुष्पा ने मौलिक कृतियों का सृजन किया है । इनके उपन्यास हो या कहानियाँ, उनमें उनके महिला पात्र अन्याय के खिलाफ लडते नजर आते हैं । मैत्रेयी पुष्पा ने इसी न्याय-अन्याय की कहानी अपने 'चाक'उपन्यास में चित्रित की है जिससे आज के प्रस्थापित समाज की महिला के प्रति अपनी संकीर्ण मानसिकता उजागर होती है ।

'चाक' उपन्यास महिला प्रदान उपन्यास है । उपन्यास की नायिका है 'सारंग' जो अपने पति के हत्या का बदला लेना चाहती है । सारंग के पति रंजीत को गाँव का गुन्डा डोरिया मार डालता है । डोरियाँ की गाँव में काफी दहशत है । पुलिस से भी उसका उठना बैठना है । उस कारण कोई भी उसके खिलाफ आवाज नहीं उठाता, लेकिन सारंग अपने पति के हत्या करने वाले को सजा देना चाहती है । उसके लिए वह

कुछ भी करने के लिए तयार है । वही पति के हत्यारों को मारने के लिए आग बबुला हो उठी है । एक ओर हम निडर सारंग देखते है तो दूसरी ओर उसकी सास जो उन महिला का प्रतिनिधित्व करती है जो सदियों से पुरूषों के जुल्म को सह रही हैं । वह अपने बहु को बेटे के दुख भुलाकर पुर्नरविवाह करने की सलाह देती है । लेकिन सारंग मानती नहीं । पुराने खयालों हरि हुई मानसिकता महिला में किस तरह आज भी मौजूद है इसे कथाकार अन्य एक उध्दाहरण प्रकट करती है ।

उपन्यास के प्रारंभ में ही एक छोटी कथा है । रेशम और करमवीर पति-पत्नी है । रेशम सारंग से महज पाँच साल से छोटी है । करमवीर को शराब की लत है । एक दिन विषैली शराब पीने से उसकी मौत हो जाती है । रेशम जवान औरत है । वह अपना यौवन किसी पुरूष को समर्पित करती है जिससे वह गर्भवती बन जाती है । वास्तव में ऐसा शरीर सुख उसे अपने पति करमवीर से कभी भी नहीं मिला । परन्तु लोग लज्जा से वह उसके साथ रहती थी । लेकिन जब आज वह गर्भवती बनती है तो गाँव में एक ही हंगामा मच जाता है । उसकी सास उसे जब इसके बारे में पूछती है तो तब रेशम नीडर होकर अपने सास से जवाब देती है ।

" तुम्हारे पूत की चिंता ठंडी हो जाने से क्या मेरी देह की आग बुझ जाती ? जीतो-मरतो का भदे भी भूल गई तुम?

बेटा के संग मैं भी मरी मान ली"[१]

प्रस्तुत उध्दहरण से नारी मुक्त यौन सम्बन्ध को स्वीकार रही है यह अधोरेखित होता है । परन्तु समाज उसे मान्यता नहीं देता, लेकिन यहि समाज औरत के जिन्दा रहते ही किसी अन्य महिला पति अनैतिक सम्बन्ध रखता तो उसका कुछ नहीं बिगडता है । औरत के लिए बने बनाये रास्ते को रेशम छेद देती है । रेशम उन तमाम महिलाओं के भावनाओं को प्रकट करती है जो किसी ना किसी कारण अपने पती के रहते या ना रहते काम भावनाओं से असंतुष्ट है ।

आज आधुनिकता का दोर माना जाता है फिर भी रेशम जैसे महिलाओं के स्वच्छंद यौन सम्बन्धों को स्वीकारने में समाज सिसकता नजर आता है । उपन्यासकार तो यहाँ तक कहती है ।

" स्त्री जीवन में पतिव्रत धर्म को

तोडनेवाली औरत के लिए

दण्ड विधान..."[२]

और यह सच है कि समाज के कुछ लोग रेशम जैसे महिलाओं की हत्या कर डालते है । आज महिलाओं के हत्या के पीछे सेक्स सम्बन्ध एक सबसे बडा कारण माना जाता है । आज भी उसके सेक्स भावनाओं का दमन होता है, मैत्रेयी पुष्पा ने रेशम के माध्यम से स्त्री के इस वास्तव रूप को प्रकट किया है।

सम्बन्ध विश्व में नारी आज पुरूष से कंधा से कंधा मिलाकर विश्व निर्माण में योगदान दे रही है । व्यापार, नौकरी, खेल-कुद सभी जगह भागीदारी जता रही है। राजनीति भी महिला के लिए अब अपवाद नहीं रहीं । परन्तु आज पुरूष राजनीति पर अपना ही अधिकार मानती है । इसी कारण राजनीति में महिला का स्थान बनाने में संघर्ष करना पडता है । पंचायत राज में आरक्षण के कारण महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढ गयी है परंतु उसके अधिकार पर पुरूष दावा बोल देते । कई जगह पत्नी के अधिकार पति ही चलाता है और खास तौर पर खुली सीट पर महिला पुरूष को चुनौति देती है तब संघर्ष की स्थिति बन जाती है । उध्दाहरण दृष्टव्य है-

" जब घर परिवार में औरत का दखल हो सकता है, तो राजकाज में क्यों नहीं? तुम पढी लिखी हो, खुब जानती हो, हमारे संविधान में औरत को बराबरी का दर्जा मिला है।

तुम कब तक पत्नी होने की दुहाई देती रहोगी?"[३]

प्रस्तुत उध्दाहरण से नारी अपने अधिकार के प्रति सजग हो रही । वह संविधान में निहित अपने-अपने कानुन प्रवधान से परिचित हो चुकी है । मतदान जैसे मौलिक अधिकार के समानता को समजती है ।

One man, one vote

One vote, one Value से नारी का आत्मविश्वास बढा । परिणामतः आज वह पुरूष के खिलाफ भी चुनाव लढ रही है ।

'चाक' में चित्रित स्त्री पात्र सारंग और रेशम के अलावा अन्य भी महत्वपूर्ण स्त्री पात्र है- जिसमें पांचन्ना बीवी के कच्ची उम्र में विधवा हो जाती है । मनोहर अपने बीवी का पेट की अभ्रक को गिरा देता है, क्योंकि उसे संदेह है कि वह संतान उसकी नही बल्कि किसी गैर-पुरूष की है । इस तरह नारी के शोषण के विभिन्न पहलू मैत्रेयी पुष्पा अपने उपन्यास में चित्रित करती है ।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 'चाक' में मैत्रेयी पुष्पा ने नारी विमर्श को प्रखर रूप में अपने सम्पूर्णता के साथ प्रकट किया है । प्रस्तुत उपन्यास मे नारी से जुडी समस्याएँ को भी अधोरेखित किया है जिसमें अवैध संबधों की समस्या, नार्मद पुरूष से प्रताडित स्त्री की समस्या, प्रेम विवाह से प्रताडित स्त्री, विधवा माँ की समस्या, कुँवारी माता की समस्या आदि को उजागर किया है ।

अतः प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री-विमर्श को सफलता से चित्रित करने में मैत्रेयी पुष्पा सफल रही है । उसके नारी पात्र अपने आत्मसम्मान के लढाई लढ रहे है । अपने अधिकार प्रति जागृत हो रहे है तथा यह संदेश देने में भी सफल हुए है कि नारी उत्कर्ष से ही सम्बन्ध समाज का भी उत्कर्ष होगा ।

संदर्भ :

१. चाक, मैत्रयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.क्र. १९
२. वही, पृ.क्र.१८
३. वही,पृ.क्र.४००